

सहसंबंध की उपयोगिता

Date _____

Page _____

दो चरों की पारस्परिक निर्भरता को सांख्यिकीय भाषा में सहसंबंध कहते हैं। Correlation method का अन्वेषण करने का क्रम Jastrow को है। Karl Pearson ने लगभग 1900 ई० में सहसंबंध ज्ञान करने की आधुनिक विधि का प्रतिपादन किया। इन दोनों सांख्यिकीय विधियों में इस विधि की सहायता से प्राणिशास्त्र तथा जनन-विद्या की अनेक समस्याओं का विवेचन किया। आज सहसंबंध का प्रयोग मनो-विज्ञान तथा शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में होने लगा है।

सहसंबंध के द्वारा विभिन्न रिक्तियों तथा लक्ष्यों के संबंध का अध्ययन किया जाता है। इसके अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि दो चर-शक्ति-यों में संबंध किस दिशा में है, अर्थात् संबंध धनात्मक दिशा में है या ऋणात्मक। दूसरी ओर यह भी पता चल जाता है कि दो चर-शक्तियाँ आपस में किस सीमा तक संबद्ध हैं, अर्थात् संबंध की मात्रा का भी ज्ञान हो जाता है। व्यवहार के विभिन्न पक्षों के अध्ययन से सहसंबंध के अनेक महत्वपूर्ण उपयोग हैं—

1. जब हमें व्यक्तियों के एक से अधिक शीलगुणों, योगताओं या विशेषताओं का अध्ययन करना होता है तो सहसंबंध के आधार पर ही इसका अध्ययन करना होता है। सहसंबंध के आधार पर विभिन्न योगताओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है। इसके द्वारा छात्रों की विभिन्न योगताओं का तुलनात्मक अध्ययन कर सकते हैं।

2. सहसंबंध की जानकारी के आधार पर छात्रों का मार्गदर्शन किया जा सकता है। गणित में अच्छे अंक प्राप्त करने वाले को अभिजातिक की पढ़ाई की ओर तथा जीव विज्ञान में अच्छा करने वाले को मेडिकल की पढ़ाई की ओर प्राथमिक श्रेणीक बल देते हैं। औद्योगिक मार्गदर्शन में सहसंबंध के प्रयोग को अस्वीकार नहीं जा सकता है।

3. सहसंबंध के आधार पर परीक्षकों की विश्वसनीयता जात करते हैं। पुनः परीक्षण विधि द्वारा सहसंबंध का परिकल्पन कर विश्वसनीयता - गुणोंक निकालते हैं। किसी भी परीक्षण की विश्वसनीयता - गुणोंक सहसंबंध पर ही आधारित है।

इस अवस्था में सहसंबंध गुणांक विश्वसनीयता गुणांक भी कहलाता है।

4. सहसंबंध के कारा मनो-विज्ञान तथा शिक्षा जगत में विभिन्न प्रकार के भविष्यकथन किये जाते हैं। यदि हमें दो चरों के पारस्परिक सहसंबंध की जानकारी हो तो एक चर की संख्याओं के आधार पर दूसरे चर के स्वरूप के विषय में भविष्यकथन कर सकते हैं और X तथा Y चरों के बीच सहसंबंध की जानकारी रहने पर X -चर के आधार पर Y -चर के प्राप्ति की और Y -चर के आधार पर X -चर के प्राप्ति की जानकारी हो सकती है। सहसंबंध ज्ञान रहने पर विश्वास के साथ और शुद्धता से भविष्यवाणी संभव है। इसलिए प्रतिगमन और भविष्यकथन में सहसंबंध के महत्व को अस्वीकारा नहीं जा सकता है।

5. परीक्षा की वैधता ज्ञात करने के पहले सहसंबंध का परिकलन आवश्यक है। वैधता ज्ञात करने के लिए एक नवनिर्मित परीक्षा के प्राप्ति एवं किसी मानकीकृत परीक्षा के प्राप्ति के बीच सहसंबंध ज्ञात करना होता है।

तभी उस नवनिर्मित परीक्षा की वैधता ज्ञात करने के लिए हो सकती है। इस प्रकार सहसंबंध विधि के द्वारा मनोविज्ञान तथा शिक्षा के क्षेत्र में प्रयोग में लाये जाने वाले परीक्षाओं की वैधता का पता लगाने में सहसंबंध-गुणांक से बहुत अधिक सहायता मिलती है।

6. तत्व-विश्लेषण के लिए सहसंबंध मैट्रिक्स बनाना होता है जिसके लिए सहसंबंध-गुणांक की आवश्यकता पड़ती है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं, कि तत्विक विश्लेषण का आधार भी सहसंबंध है।

Dr. Om Prakash Verma
 P.O. Deptt of Psychology
 Maharaja College, A.K.A.